।।अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाश : 01565 -224600, 224900

व्यक्तित्व विकास के लिए जीवन विज्ञान

-तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)-

श्रीडूँगरगढ़ 3 जनवरी 2010 : मुनि कि-ानलाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को तेरापंथ भवन में संबोधित करते हुए कहा जीवन विज्ञान जीवन के नियमों की खोज है। जीवन विज्ञान ि-क्षा का नया आयाम है। जीवन विज्ञान जीने की कला है। आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा दिया हुआ बीजरुप अवदान जीवन विज्ञान है। जीवन विज्ञान से स्वभाव, आदतों में परिवर्तन होता है। जीवन विज्ञान से ि-क्षा जगत में अभिनव क्रांति आ सकती है।उन्होनें कहा कि महाप्राणध्वनि से आवे-ा का संतुलन होता है। वाणी मध ुर होती है। स्मरण :ाक्ति विकसित होती है। मुम्बई के स्कूल में हुए एक :ाोध से बोर्ड की परीक्षा में विद्यार्थीयों की अंकतालिका में 25 प्रति-ात की अंक वृद्धि हुई। जिन विद्यार्थीयों को जीवन विज्ञान के प्रयोग, कायोत्सर्ग, प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा और संकल्प के प्रयोग कराये गये । उनमें यह विकास पाया गया। जिन्होनें प्रयोग नहीं किए उनके अंक की तालिका 50 प्रति-ात ही रही, जबकि प्रयोग कर्ताओं की अंक तालिका 75 प्रति-ात रही।

मुनि कि-ानलाल ने आगे बताया कि जीवन विज्ञान के प्रयोग सघन और सरल है। नवमीं और दसवीं कक्षा में, जीवन विज्ञान की एक इकाई 25 नम्बर की है। प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोगों से विद्यार्थीयों में अनु-ाासन, अभय और विनम्रता का विकास होता है।

युवाचार्य महाश्रमण विद्यार्थीयों को आ-ाीर्वाद देते हुए कहा विद्या, विनय और विवेक द्वारा श्रेश्ठ विद्यार्थी बना जा सकता है। विद्यार्थी अनु-ाासन और :ाालीनता से श्रेश्ठ बन सकता है। जीवन विज्ञान प्रयोगों ने विद्यार्थी अपना विकास कर सकता है।

प्रवचन से पूर्व समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रार्थना सभा को निर्धारित प्रयोग करवाये। जीवन विज्ञान प्रि-ाक्षक गिरिजा :ांकर दुबे ने कार्यक्रम का समायोजन किया। इस मौके पर :ाखा के अध्यापक भी उपस्थित थे।

सादर प्रका-ानार्थ : -
श्री प्रमोद जी घोड़ावत
सम्पादक, तेरापंथ टाईम्स
नई दिल्ली

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/ सहसंयोजक